डॉ. सुरेश अनंतराव गायकवाड,
एम.ए.,पी-एच.डी.
हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं
स्नातकोत्तर अध्यापक तथा शोध निर्देशक
कला, वाणिज्य महाविद्यालय,
सातारा. (महाराष्ट्र)

- प्र मा ण प त्र -

यह प्रमाणित किया जाता है कि प्रा. फडणीस नारायण आवटे ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए " **नागार्जुन के उपन्यासों में निम्नवर्ग का चित्रण** " शीर्षक से प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। यह शोधार्थी की मौलिक कृति है। जो तथ्य इस लघु-शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किये गये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं। प्रा. फडणीस नारायण आवटे के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

Shirwad

सातारा

दिनांक : 30 दिसम्बर, 1993

डॉ. सुरेश अनंतराव गायकवाड
शोध निर्देशक

000

प्रा.डॉ. व्ही. के. मोरे
एम्.ए., पी-एच्.डी.
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
(महाराष्ट्र)

- प्र मा ण प त्र -

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु-शोध-प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाय।

कोल्हापुर

दिनांक : 30 दिसम्बर, 1993

डॉ. व्ही. के. मोरे
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर
Reader and Head
Department of Hindi,
Shivaji University,
Kolhapur - 416004

000

- प्र स्था प न -

' नागार्जुन के उपन्यासों में निम्नवर्ग का चित्रण '

यह लघु-शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल. (हिन्दी) के लघु-शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

रामानंदनगर

दिनांक : 30 दिसम्बर, 1993

शोध छात्र

(श्री. फडणीस नारायण आवटे)

000

- प्रा क्क थ न -

साहित्य समाज-निरपेक्ष नहीं, समाज-सापेक्ष होता है। इसी में साहित्य की सामाजिक सोद्देश्यता निहित है। नागार्जुन एक ऐसे लब्धप्रतिष्ठ उपन्यासकार है जिन्होंने अपने औपन्यासिक, साहित्य को सामाजिक सोद्देश्यता के साथ जोड़ा और यथार्थवादी-जनवादी कथा-परम्परा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। नागार्जुन के व्यक्तित्व और कृतित्व में कोई मौलिक भेद नहीं है। फिरभी उनके साहित्य में विचारधारात्मक कई असंगतियाँ और अन्तर्विरोध मौजूद हैं। वे कभी अपने आप को मार्क्सवादी कहते है, कभी प्रगतिशील मानते हैं तो कभी जनवादी। वस्तुतः उनकी प्रतिबध्दता साम्यवादी विचारधारा के प्रति तथा भारत की अस्सी प्रतिशत श्रमजीवी जनता के प्रति है। जनता के स्वर में स्वर मिलाकर उसे प्रेरणा देते हुए उनके कंधे से कंधा भिड़ाकर चलने वाले सक्रिय "साथी" नागार्जुन है। स्वयं अभावों का आसव पान कर नागार्जुन ने दलित एवं शोषित समाज की पीड़ाओं का गान कर उनका सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व किया है। नागार्जुन के साहित्य का वास्तविक संसार सर्वहाराओं का संसार है। उनका समस्त जीवन-संघर्ष पूँजीवादी व्यवस्था के स्थान पर समाजवादी व्यवस्था की स्थापना के लिए है। उनका जीवन और साहित्य शोषित-दुःखित किसान-मजदूरों के शोषण से मुक्ति के लिए समर्पित है और लक्ष्य है वर्गहीन समाज की स्थापना। उनके उपन्यासों का मुख्य स्वर साम्राज्यवाद और सामन्तवाद विरोधी है। नागार्जुन का विश्वास है कि भारत की श्रमजीवी जनता अपने जीवन-संघर्ष द्वारा शोषक पूँजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंककर वर्गहीन समाज की स्थापना करने में अवश्य ही सफल होगी। नागार्जुन ने सामाजिक समस्याओं के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाकर उसका समाधान मार्क्सवादी चिंतन के आधारपर प्रस्तुत किया है। जमींदार-सामन्त वर्ग विलासिता में डूबा रहता है और किसान-मजदूर वर्ग के श्रम पर ऐश्वर्य-भरा जीवन व्यतीत करता है। नागार्जुन ने इस वर्ग के शोषण और अत्याचारों से मुक्ति के लिए किसानों और मजदूरों को संगठित करके संघर्ष का नया रास्ता दिखाकर निम्नवर्ग को अपने अधिकारों के प्रति सजग और सचेत किया हैं।

आंचलिक उपन्यासों की परम्परा के विकास में नागार्जुन का योगदान अद्वितीय है। उनका मिथिला-अंचल से प्रत्यक्ष संबंध रहा है। उन्होंने वहाँ की सामाजिक, आर्थिक समस्याओं और संघर्षों, रीति-रिवाजों, रुढ़ियो-कुप्रथाओं, लोकगीतों, लोक कथाओं और असंगतियों का अपने उपन्यासों में सूक्ष्म अध्ययन-मनन कर युगानुरुप समाधान भी प्रस्तुत किये हैं। नागार्जुन की नारी के प्रति पूर्ण सहानुभूति है, वे नारी स्वतन्त्रता के प्रबल समर्थक है। पुरुष प्रधान भारतीय समाज में नारी अनन्त काल से शोषित रही हैं। अतः नागार्जुन चाहते है कि समाज की जर्जर और रुढ़ मान्यताओं के विरुध्द संघर्ष करते हुए भारतीय नारी आत्म सम्मान का जीवन व्यतीत करे। इसलिए उनके उपन्यास की नारियां शिक्षा-दीक्षा पर

जोर देकर निरन्तर संघर्ष करती हुअी आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होकर स्वावलम्बनभरा जीवन जीना चाहती है। देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीतिक तत्वहीनता, रुढ़ियों तथा सांप्रदायिकता के विरुध्द उनके मन में तीव्र आक्रोश है। रुढ़ियों एवं अंधविश्वासों का खंडन करते हुए प्रगतिशील विचारों का प्रचार-प्रसार कर समाज-सुधार करना नागार्जुन का लक्ष्य रहा है। नागार्जुन कर्म को ही सबसे बड़ा धर्म मानकर धर्म जैसे पवित्र क्षेत्र में फैले हुए स्वार्थ, व्याभिचार तथा शोषण का विरोध करते हैं।

इस लघु-शोध-प्रबंध में नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित निम्नवर्ग के विभिन्न पक्षों का जो रुप उद्‌घाटित हुआ है वह व्यवस्थित एवं वैविध्यपूर्ण हैं। निम्नवर्ग की विशिष्टताओं को ध्यान में रखते हुए उपसंहार के अतिरिक्त इस लघु-शोध-प्रबंध को पांच अध्यायों में विभक्त किया है।

प्रथम अध्याय में नागार्जुन की प्रामाणिक जीवनी एवं व्यक्तित्व को प्रस्तुत करते हुए उनकी औपन्यासिक कृतियोंका भी संक्षिप्त परिचय दिया गया है। साथ ही उनके साहित्य की प्रेरणा एवं प्रभाव को स्पष्टकर अन्य कृतियों को नाम निर्देश किया है।

द्वितीय अध्याय में निम्नवर्ग के सामाजिक पक्ष का अध्ययन युगीन संदर्भों के अनुसार किया हैं। उपन्यास में प्राप्य नारी और समाज जीवन से संबंधित समस्याओं का चित्रण करते हुए पारिवारिक जीवन में विकसित होने वाले संबंधों का विश्लेषण किया हैं। अध्याय के अन्त में किसान-मजदूर चेतना सम्बन्धी सविस्तर चर्चा की है।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत उपन्यासों में चित्रित कृषकों एवं निम्नवर्ग की दयनीय आर्थिक स्थिति और उसके मूल कारणों का उल्लेख किया गया है। इसके साथ ही निम्नवर्ग के आर्थिक दुर्दशा के परिणामों का अध्ययन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में निम्नवर्ग के सांस्कृतिक पक्ष का अध्ययन प्रस्तुत करते हुए निम्नवर्ग के जीवन में प्रचलित सांस्कृतिक उपादानें की विशद चर्चा कर उनका निम्नवर्ग के प्रगति में बाधक रुप स्पष्ट किया हैं।

पंचम अध्याय में नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित निम्नवर्ग के धार्मिक एवं दार्शनिक पक्ष का उद्‌घाटन किया है। धार्मिक रुढ़ियों और अंधविश्वासों का अध्ययन कर धर्म में फैले व्याभिचार तथा पाखण्ड पर नागार्जुन के तीव्र प्रहारों का विवेचन प्रस्तुत किया है। साथ ही निम्नवर्ग के जीवन दर्शन के संदर्भ में उपन्यासकारके व्यक्त विविध दृष्टिकोण का सांगोपांग चित्रण किया है।

अन्त में उपसंहार के अन्तर्गत संपूर्ण अध्ययन के निष्कर्षों की प्रस्तुति तथा नागार्जुन के उपन्यास साहित्य की उपलब्धियों तथा भावी अध्ययन की संभावनाओं पर भी विचार किया गया है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध मेरे निर्देशक आदरणीय गुरुवर डॉ. सुरेश अनंतराव गायकवाड जी

के आत्मीय एंव प्रेरक निरीक्षण-निर्देशन का प्रतिफल है। जिन्होंने अपने अध्यापन-अध्ययन में से मूल्यवान समय निकालकर हर समय बड़ी तत्परता और तन्मयता से मौलिक मार्गदर्शन कर मुझे प्रेरित किया है। उनकी इस उदार-सहृदयता के प्रति स्नेह एवं श्रध्दा से भरा मेरा हृदय सदा ही ऋणी रहेगा। साथ ही श्रध्येय डॉ. गजानन सुर्वेजी के समय-समय पर दिए गए मौलिक सुझावों से भी मैं लाभान्वित हो चुका हूँ, यहाँ तक कि आपने अधिकारपूर्वक मेरा उत्साह बढ़ाया है, अतः सुर्वेजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने में मैं आत्मीक संतोष का अनुभव कर रहा हूँ। मैं शिवाजी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रा. डॉ. व्ही. के. मोरे जी के प्रतिभाशाली एवं उदार व्यक्तित्व के प्रति नत हूँ, जिन्होंने समय-समय पर बहूमूल्य निर्देशन देकर शोध कार्य का मार्ग प्रशस्त किया, उनका मैं हृदय से आभारी हूँ।

प्रस्तुत शोध कार्य में मुझे श्रध्येय प्राचार्य आर.डी. गायकवाड, आदरणीय प्राचार्य दिपा महानवर जी से प्रेरणा और विशेष सहायता मिली है, इस अनुकम्पा के लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। मेरे सहयोगी मित्रवर्य प्रा. जे. पी. पाटील, प्रा. डी. एस्. थोरात, प्रा.डॉ.वाय्. बी. धुमाळ, प्रा. धनजंय घुटुकडे आदि के द्वारा प्राप्त उचित परामर्श, सहकार्य एवं सद्भावना के लिए मैं अपनी ओर से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। शोध कार्य को परिणति तक ले जाने में रामानंदनगर कॉलेज के ग्रंथपाल श्री.आर.बी. गुरव; उनके सहयोगी श्री.विनोद कासार, श्री. शंकरराव अंबी, सद्गुरु गाडगे महाराज कॉलेज के ग्रंथपाल एवं मेरे मित्र श्री. एस्. एन्. भोसले, कला, वाणिज्य महाविद्यालय, सातारा के ग्रंथपाल श्री. एल्. ए. पाटील आदि का मैं विशेष ऋणी रहूँगा, जिन्होंने पुस्तकों को जुटाने में अत्यन्त आत्मीयता से मेरी सहायता की।

इस शोध कार्य की सफलता के लिए मैं अपनी सहधर्मिणी सौ. मालन तथा सुहासिनी के प्रति आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझता हूँ, जिसने परिवार का तमाम भार संभालकर मुझे सहयोग दिया। सहयोग की मात्रा में मेरी छोटी मासूम संताने कु.पयस्विनी, चि. पंकज, व चि.पराग तथा मेरी साली कु. सुनिता का हिस्सा भी मूल्यवान है, अतः वे भी मेरे स्नेहदान के अधिकारी हैं। आज मैं जो कुछ भी हूँ उसके एकमात्र अधिकारी मेरे ईश्वरतुल्य माता-पिता है, जिनके आशीर्वाद से यह शोध कार्य संपन्न हो सका यह मेरा दृढ़ विश्वास है, उनके आभार मानना औपचारिकता ही होगी।

इस प्रबन्ध के टंकन का अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य ज्योती इलेक्ट्रानिक्स टायपिंग सेंटर, कराड के प्रबंधक श्री और श्रीमती ज्योती नांदेडकरजी ने तत्परता से किया, उनके सहकार्य के लिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ।

रामानंदनगर

दिनांक : 30 दिसम्बर, 1993

विनीत

प्रा. फडणीस नारायण आवटे

- नागार्जुन के उपन्यासों में निम्नवर्ग का चित्रण -

- अनुक्रमणिका -

अध्याय - 1 : **नागार्जुन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व** 1 - 25

जीवनवृत्त, **व्यक्तित्व** - बाहय पक्ष - आन्तरिक पक्ष, साहित्यिक व्यक्तित्व, **कृतित्व** - उपन्यास : संक्षिप्त परिचय, हिन्दी-मैथिली काव्य संकलन, खण्डकाव्य, मैथिली उपन्यास, संस्कृत कविता - लघु काव्य, लघु प्रबंध, गद्य संग्रह, कहानी संग्रह, बाल साहित्य, अनुवाद का नाम निर्देशन, **प्रेरणा एवं प्रभाव।**

अध्याय - 2 : **निम्नवर्ग का सामाजिक पक्ष** 26 - 68

विषय-प्रवेश, **समाज अर्थ और स्वरूप** - समाज शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, **व्यक्ति-समाज और सामाजिक संस्था** - परिवार संस्था, जाति या वर्ग, संप्रदाय, आर्थिक संस्थाएँ, धर्म संस्था, राज्य संस्था, शिक्षा संस्था, विवाह संस्था, लोकाचार-लोकनीति : रूढ़ि एवं परम्पराएँ **सामाजिक वर्गीकरण** - प्रस्तावना, परिभाषा, सामाजिक वर्ग की कसौटी, सामाजिक संरचना और निम्नवर्ग **निम्नवर्ग** - परिभाषा, स्वरूप, निम्नवर्ग की विशेषताएँ, निम्नवर्ग के व्यक्ति कौन? **निम्नवर्ग का सामाजिक पक्ष** - प्रस्तावना **नारी** - माँ, माँ-बेटा, माँ-बेटी, बहन-बहन, बहिन-भाई, पति-पत्नी, सास-बहू, भाभी-ननद, प्रेयसी, **निम्नवर्ग की सामाजिक समस्याएँ** - प्रस्तावना, अनमेल विवाह, विधवा समस्या और विधवा विवाह, वेश्या समस्या, जातिभेद एवं छुआछूत, **मजदूर-किसान** - प्रस्तावना, मजदूर, किसान, किसान-मजदूर चेतना, निष्कर्ष।

अध्याय - 3 : **निम्नवर्ग का आर्थिक पक्ष** 69 - 95

विषय-प्रवेश, आर्थिक स्थिति बिगड़ने के कारण, अर्थ की महत्ता तथा सर्वव्यापकता **आर्थिक स्थिति, किसानों की आर्थिक दुर्दशा तथा उसके कारण** - भूकम्प, बाढ़ और अकाल, अशिक्षा और बढ़ती जनसंख्या, धार्मिक शोषण, जमीदार वर्ग द्वारा शोषण, महाजन वर्ग द्वारा शोषण, साम्राज्यवादी शोषण, **निम्नवर्ग : आर्थिक दशा एवं दुर्दशा** - भोजन, कपड़े, मकान, बरतन और गहने, दुर्भागी बाल-बच्चे, कम तनख्वाह, सदा ऋण में, कंजूषी का आचरण, **निष्कर्ष**

अध्याय - 4 : **निम्नवर्ग का सांस्कृतिक पक्ष** 96 - 116

विषय-प्रवेश, **संस्कृति** : शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप, सभ्यता और संस्कृति, समाज-संस्कृति और साहित्य का संबंध, आँचल में संस्कृति का विकास और **नागार्जुन, निम्नवर्ग का सांस्कृतिक पक्ष** - त्यौहार-उत्सव-मेलें, रीति-रिवाज और परंपराएँ, अन्धविश्वास और श्रध्दाएँ, लोक-गीत, लोक-कथा, लोक-भाषा, **निष्कर्ष।**

अध्याय - 5 : **निम्नवर्ग का धार्मिक तथा दार्शनिक पक्ष** 117 - 148

धर्म एवं स्वरूप - विषय प्रवेश, धर्म की परिभाषा एवं स्वरूप,

निम्नवर्ग के जीवन में धर्म - बाहयाडंबर, देवी-देवताओं की पूजा, भूत-प्रेतों में विश्वास, पशु बलि, मनौतियाँ, धार्मिक विकृतियों का पोषण, धर्म के आदर्श विश्वासों का पालन, मंदिरों में अनाचार मठों में व्यभिचार, साधु-महंतों के पाखण्ड तथा विलास, **निष्कर्ष।**

निम्नवर्ग का दार्शनिक पक्ष - विषय प्रवेश, दर्शन की व्याख्या और स्वरूप, दर्शन और जीवन-दर्शन, उपन्यास में जीवन-दर्शन की अभिव्यक्ति - भारतीय विचारधाराएँ, पाश्चात्य विचारधाराएँ, **निम्नवर्ग का दार्शनिक पक्ष** - मार्क्सवादी दृष्टिकोण, साम्राज्यवाद का विरोध, गांधीवाद में अनास्था कॉंग्रेस से नफरत, साम्यवादी दृष्टिकोण, समाजवादी समानता में विश्वास, ग्रामीण नव निर्माण और सर्वोदय, नारी चेतना के प्रति उदार दृष्टिकोण, **निष्कर्ष।**

अध्याय - 6 : **उपसंहार** 149 - 153

(उपलब्धियाँ और संभावनाएँ)

संदर्भ ग्रन्थ-सूची 154 - 157

आधार ग्रन्थ

सहाय्यक ग्रन्थ - हिन्दी, इंग्रजी

कोश ग्रन्थ

स्मारिका/त्रैमासिक

000